सद्ज्ञान संवर्धन का
पुण्य–परमार्थ

---ब्रह्मवर्चस्

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सद्ज्ञान संवर्धन का पुण्य-परमार्थ

स्कूलों में एक निर्धारित समय में पूरा हो सकने वाला निर्धारित पुस्तकों का पाठ्यक्रम पूरा कराया जाता है। छोटे बच्चों के लिए अथवा सीमित विषयों की सीमित जानकारी प्राप्त करने वालों के लिए यह पद्धति उपयोगी हो सकती है। शिक्षा का सरकारी मापदण्ड यही है। नौकरी मिलने में जिन प्रमाण पत्रों की आवश्यकता पड़ती है, वे निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा कर लेने पर मिले हुए होते हैं। पढ़ते भी लोग इसी निमित्त हैं, श्रम और धन भी खर्च करते हैं। पढ़ने और पढ़ाने वालों की प्रशंसा भी इसी आधार पर होती है।

किन्तु जिन्हें ज्ञान की पिपासा है, किसी विषय विशेष में अधिक ज्ञान अर्जित करने का जिनका मन होता है अथवा जीवन में काम आने वाली समाज को प्रभावित करने वाली किन्हीं समस्याओं पर अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए स्कूली ज्ञान सर्वदा अपर्याप्त रहता है। उन्हें अपने प्रिय विषय की उच्चस्तरीय अनेकानेक पुस्तकें पढ़नी होती हैं।

हर व्यक्ति की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं होती कि वह अभीष्ट ज्ञान की पुस्तकें मंगा सके। इसके लिए हर जगह पुस्तकालयों का ही आश्रय लिया जाता है, हर विषय की अनेकानेक पुस्तकें मंगाने में जो पूंजी लगती है। साज सम्भाल की लेने और देने की जो व्यवस्था बनती है, उसके लिए उपयुक्त स्थान से लेकर फर्नीचर और एक आदमी के वेतन तक का खर्च संगठित संस्था ही कर सकती है। उसका वजट भी इतना होना चाहिए जिसमें न केवल चालू खर्च की पूर्ति होती रहे, वरन् हर महीने नया बहुमुखी साहित्य मंगाते रहने की राशि भी स्थाई खर्च में सम्मिलित रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अधिक लोगों को अधिक विद्या व्यसनी बनाने के लिए शिक्षित नर-नारियों से सम्पर्क साधना और उन्हें उत्साहित सहमत करना पुस्तकालय की ही सम्पर्क समिति का काम होना चाहिए। वह जनसम्पर्क साधने का मुहल्लेवार ऐसा कार्यक्रम बनायें कि नगर का एक भी व्यक्ति ऐसा न बचे जिसे पुस्तकालय द्वारा ज्ञान संवर्धन का लाभ विदित न हो। उनकी प्रकृति और आवश्यकता के अनुरूप कौन पुस्तकें उपयोगी हो सकती हैं, यह परामर्श भी दिये जाने की आवश्यकता है। यह क्रम चलाये बिना उपयोगी साहित्य मंगा लेने पर भी वह अचार के घड़े की तरह जहां का तहां रखा रहेगा। आवश्यकता तो इस बात की भी है, कि जहां जन सम्पर्क साधकर शिक्षितों को अपनी अभिरुचि एवम् आवश्यकता की पुस्तकों की नामावली सुझाई जाय, वहां उनके घर पुस्तक पहुँचाने और वापिस लाने का भी प्रबन्ध रहे।

अपने देश में एक तो शिक्षित ही कम हैं। फिर जो हैं उनमें से विद्या-व्यसनी लोगों की संख्या बहुत कम है। स्कूल छोड़ने के बाद प्रायः पुस्तकों को नमस्कार कर लिया जाता है और लिखने-पढ़ने की उतनी ही प्रक्रिया चलती है जो व्यवसाय के काम आती है। बहुत हुआ तो खाली समय में मनोरंजक पुस्तकें किसी से मांग जाँच कर ऐसी ले ली जाती हैं जिनमें हँसी-दिल्लगी या जासूसी तिलस्म अय्यासी, जैसे विषय हों। कामुकता भड़काने वाले अश्लील उपन्यास भी लोगों को रुचते हैं। लोगों की सामान्य स्वाभाविक प्रकृति पुस्तकें पढ़ने के सम्बन्ध में इसी सीमा तक सीमित होकर रह गई है जैसे फिल्में भी उथले स्तर की मनोरंजन प्रसंगों की ही दर्शकों से सिनेमा घर भरे रहती हैं, ठीक वही बात पुस्तक पढ़ने के संबंध में भी है। पुस्तक विक्रेताओं की दुकानों पर ऐसा ही उथला साहित्य भरा रहता है। शिक्षितों का लोक मानस प्रायः इसी स्तर का पाया जाता है। किसी को कुछ पढ़ना हो तो लोग इसी स्तर की पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें पढ़कर अपना मनोरंजन करते हैं। इस मनोभूमि को उलटने के लिए ऐसे पुस्तकालयों की आवश्यकता है, जो जीवन के साथ जुड़े हुए अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत कर सके और सामाजिक विकृतियों के कारण होने वाली हानियों का स्वरूप समझाते हुए उनसे पीछा छुड़ाने का मार्ग सुझा सके। कोई किसी विषय का विशेषज्ञ बनना चाहता है, तो उसके लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके लिए दुहरी आवश्यकता है एक तो पुस्तकालय के पहुँचने में सुलभ स्थान पर स्थापना—दूसरे उसमें पर्याप्त पुस्तकें होना। यह साहित्य कूड़े करकट जैसा लोक रुचि के अनुरूप नहीं वरन् ऐसा होना चाहिए जो पाठकों को ऊँचा उठाने बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सके। ऐसी पुस्तकें कई व्यक्ति एक साथ मांग सकते हैं इसलिए कुछ पुस्तकों के दुहरे तिहरे सैट भी होने चाहिए। यह सारा सरंजाम ऐसा हो, जिसे जुटाने में आरंभिक पूँजी भी बड़ी लगेगी और पीछे एक व्यक्ति की नियुक्ति, मकान मरम्मत तथा हर महीने नई-नई पुस्तकें मंगाते रहने का खर्च चलाता रहे। स्थाई फंड तथा मासिक खर्च की दोनों ही व्यवस्थाएं चलनी चाहिए। पढ़ने वालों से मासिक फीस तब वसूल होती है, जब वे स्वेच्छापूर्वक पढ़ने में रस और रुचि लेने लगें। उसके पूर्व तो उनसे सम्पर्क साधने का समय और मुफ्त में घर जा-जा कर उपयोगी पुस्तकें देने और वापिस लाने का झंझट स्वयं ही उठाना पड़ता है। उसे भले ही संस्था के उत्साही सदस्य सेवा भावना से उठायें या फिर एक व्यक्ति इसी निमित्त वेतन देकर रखा जाय। एक तरीका यह भी है कि जो एक व्यक्ति स्थाई रूप से रखा गया है, वह चार घंटे सम्पर्क साधने में लगाये और चार घंटे पुस्तकालय खोलकर बैठे।

समूचे कार्यक्रम पर दृष्टिपात किया जाय तो वह जितने असाधारण महत्व का है, उतना ही खर्चीला भी है। यह किसी देवालय—धर्मशाला—कुआँ—तालाब बनाने या सदावर्त बाँटने से कम पुण्य-परमार्थ का काम नहीं है। लोगों के लिए शारीरिक सुविधा-साधन जुटा देना ही पुण्य नहीं है, वरन् किसी को सद्ज्ञान संवर्धन की दृष्टि से अधिक विचारशील बनाना उसमे अनेक गुना श्रेयस्कर है। धर्मशाला, सदावर्त आदि के द्वारा शरीरों को लाभ दिया जाता है, वह सुविधा कुछ ही समय सुख देती है। किन्तु सत्साहित्य के द्वारा मिला हुआ ज्ञान दान किसी का चिन्तन और चरित्र उठा सकता है, व्यक्तित्व उभार सकता है। इस प्रकार वह लाभ चिरस्थाई रहता है और यह प्रकाश एक से दूसरे तक पहुँचते रहने के कारण अनन्त पुण्य फल दायक बन सकता है। इस कारण अन्न दान की तुलना में ब्रह्म दान का प्रतिफल हजार गुना अधिक माना गया है। कठिनाई एक ही है कि विद्या का महत्व एवम् प्रतिफल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझा नहीं गया। इसलिए अनजान लोगों की दृष्टि में पुस्तकालय योजना छोटी हो सकती है। किन्तु विज्ञजन विद्यालय की तुलना में पुस्तकालय का महत्व कम नहीं आंक सकते।

प्रचलन न होने पर भी-महत्व न समझे जाने पर भी-विचारशील लोगों का काम यह है कि जो श्रेयस्कर है, उसमें लोगों की रुचि पैदा करें और जिससे अत्यधिक हित साधन हो सकता है उसे अनिच्छापूर्वक भी गले उतारें।

प्रज्ञा पुस्तकालय यों छोटे से छोटा इस प्रकार भी बन सकता है कि अपने अंशदान से सस्ते ट्रैक्ट–फोल्डर खरीदते रहा जाय और निजी श्रम दान से सम्पर्क साधकर पढ़ने, देने और वापिस लेने का क्रम चलाया जाय। किन्तु यदि साधन सम्पन्न संस्थान खड़ा करना है, तो फिर उसके लिए आरंभिक राशि की जरूरत पड़ेगी। यह जितनी अधिक संभव हो सके, प्रयत्न किया जाय और उसमें छांटी हुई ज्ञानवर्धक पुस्तकें बड़ी संख्या में खरीदने का प्रबंध किया जाय। अखण्ड ज्योति पाठक के यहाँ समय-समय पर खरीदा गया युग साहित्य हो सकता है। उनसे मांग कर भी पुस्तकालय में भंडार के थोड़ा बहुत अभिवर्धन हो सकता है।

यों ज्ञान की अगणित धारायें हैं। इनमें कुछ ऐसी भी हैं जो अधिक सांसारिक जानकारियाँ बढ़ाने और अपने व्यवसाय की अभिवृद्धि में सहायक हो सकती हैं। विदेशों में हर समझदार व्यक्ति आजीवन विद्यार्थी रहता है। स्कूली समय पूरा हो जाने के उपरान्त पुस्तकालयों को ही अपना स्कूल समझता है और उनके सहारे अपनी ज्ञान सम्पदा स्कूली पढ़ाई की तुलना में अनेक गुनी अधिक बढ़ा लेता है। बौद्धिक ज्ञान की अभिवृद्धि के साथ-साथ सांसारिक प्रगतिशीलता का बढ़ना भी सुनिश्चित है। जिस प्रकार हर व्यक्ति को कमाने-खाने में रुचि रहती है, उसी प्रकार समझदार लोग अपनी ज्ञान सम्पदा बढ़ा कर प्रगति पथ पर प्रशस्त करते हैं। प्रधानमंत्री पद की अत्यधिक व्यस्तता और समय की कमी रहने पर भी पं० जवाहर लाल नेहरू रात को बारह से दो बजे तक उपयोगी पुस्तकें पढ़ते थे। इसके लिए उन्हें अपनी नींद के घंटों में कटौती करनी पड़ती थी। संसार भर के समझदार राजनेता, अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, व्यवसायी, चिकित्सक, सेनापति आदि अपनी ज्ञान-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org / www.vicharkrantibooks.org

वृद्धि के लिए आजीवन नियमित पढ़ने की प्रक्रिया जारी रखते हैं। उसे जीवन के सर्वोत्तम कार्यों में से एक अति महत्व का काम मानते हैं। सम्पन्न लोग निजी खरीद कर के घरेलू पुस्तकें भी मंगा सकते हैं, किन्तु जिनकी भूख अधिक और साधन कम हैं उन्हें पुस्तकालयों का ही आश्रय लेना पड़ता है। जिन विचारशीलों ने पुस्तकालय स्थापना का काम हाथ में लिया है, उनने विश्वास किया है कि अत्यन्त उत्कृष्ट स्तर के काम में हाथ डाला जा रहा है। किसी सामान्य जन को मन्दिर बनाने में जो भाव तुष्टि होती है, विचारशील उसकी तुलना में अनेक गुना उत्साह और संतोष पुस्तकालय निर्माण में करते हैं।

अपने देश में आर्थिक पिछड़ापन जितना है, उसकी तुलना में बौद्धिक सम्पदा की कमी और भी अधिक है। गरीबी से जितना कष्ट होता है, उसे सभी जानते हैं, किन्तु कोई बिरले हीं समझ पाते हैं कि बौद्धिक पिछड़ेपन के कारण जीवन अंध-कूप में ही पड़ा रहता है और उसे प्रगतिशील समाज का सदस्य बनने तथा व्यक्तित्व को प्रतिभावान बनाने का सुयोग कभी मिलता ही नहीं। गरीबी उतनी बड़ी लानत नहीं है, जितनी कि विचारशीलता के क्षेत्र में मनुष्य का कूप मंडूक बना रहना।

अपने देश में—प्रतिगामिता जीवन के हर क्षेत्र में छाई हुई है। मानवोचित विचारशीलता की सर्वत्र भारी कमी दिखाई पड़ती है और बिरले ही जानते हैं कि समय ने अगणित समस्याएं क्यों कर उत्पन्न की हैं। उनने कितनी क्षति पहुँचाई है और यदि उनसे पीछा छुड़ाना है, तो क्या सोचना और क्या करना चाहिए।

विचार क्रान्ति अभियान आज की महती आवश्यकता है। जन मानस में दूरदर्शिता और प्रगतिशीलता भरने के लिए ज्ञान यज्ञ की जितनी उपयोगिता है, उतनी और किसी की नहीं। देश का दुर्भाग्य है कि इतने लेखक और प्रकाशकों के दिन रात कार्यरत रहते हुए भी लोकरंजन का कूड़ा-करकट ही छपता रहता है। लोक निर्माण के लिए सभी आवश्यक विषयों पर प्रकाश डालने वाला साहित्य चिराग हाथ में लेकर जहाँ-तहाँ ही उसकी हलकी-फुलकी झांकी होती है। इस दिशा में युग निर्माण योजना के अन्तर्गत सभी सामयिक विषयों पर योजना बद्ध प्रका-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शन किया गया है। साधन स्वल्प होने के कारण कम मूल्य की पुस्तकें और विशेष-तया फोल्डर सीरीज लिखी-छापी गई हैं। फिर भी आशा की जा सकती है कि व्यक्ति और समाज के सामने खड़ी हुई उलझनों में से अधिकांश का प्रगतिशील समाधान इस साहित्य में—बड़े रूप में न सही—सार संक्षेप रूप में सरलतापूर्वक पाया जा सकेगा।

ढूंढ़ने पर भी अन्यत्र भी ऐसी पुस्तकें मिल सकती हैं, जो बच्चों की, महिलाओं की, परिवारों की, वयोवृद्धों की अगणित उलझनों का हल प्रस्तुत कर सके। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, शिक्षा सम्बन्धी, आजीविका सम्बन्धी, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक प्रश्न भी इन दिनों कितने ही ऐसे हैं, जो सही मार्गदर्शन के अभाव में दिन-दिन उलझते ही चले जा रहे हैं और मनुष्यों को निजी तथा सामाजिक जीवन में बुरी तरह हैरान कर रहे हैं। दूरदर्शी विवेकवान ऐसे विचारक हर जगह उपलब्ध नहीं है, जिनके पास जाकर प्रस्तुत कठिनाइयों में से उबारा जा सके। फिर जहाँ हैं भी वहाँ उन्हें इतना समय नहीं कि जन समुदाय की उलझनों को सुनें-समझें और उनकी परिस्थिति के अनुरूप समाधान का स्वरूप बताने-समझाने में उत्साह दिखावें। ऐसी दशा में उपयोगी साहित्य ही दल-दल में फंसे हुए को बांह पकड़कर उबारने में समर्थ हो सकता है। पुस्तकालय की स्थापना विज्ञजनों को सदा-सर्वदा अपने समीप रखने और जब भी जिस भी प्रसंग पर कुछ पूछना हो, उसे बताने के लिए तत्पर रहें और कितनी देर तक, बिना दिन रात का ख्याल किये अपना परामर्श अनेक तर्क प्रमाणों समेत प्रस्तुत करते रहें। यह इतना बड़ा परमार्थ है कि अन्य किसी तथाकथित धर्म कृत्य से उसकी तुलना नहीं हो सकती।

यदि किसी गांव-नगर में उपरोक्त योजना के साथ-साथ जन-जन से सम्पर्क साधने और पढ़ाने वापिस लेने की व्यवस्था वाला साधन सम्पन्न पुस्तकालय चलाया जा सके, तो वहां के समस्त शिक्षित वर्ग को युग चेतना से अवगत-अनुप्राणित होने का सुअवसर मिल सकता है। जो बिना पढ़े हैं, उन्हें सुनने-सुनाने की प्रक्रिया चला कर वह लाभ उपलब्ध कराया जाय। घरों में यह प्रचलन होना चाहिए कि रात्रि के भोजन के उपरान्त और सोने के बीच का जो समय खाली बचता है, उसे पढ़े लोग अपने घर के बिना पढ़े लोगों को युग साहित्य सुनाया करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साथ ही इस प्रसंग पर भी विचार-विनिमय किया करें कि वैसी कोई उलझन अपने परिवार में किसी सदस्य के सामने तो नहीं है। यदि है तो युग साहित्य में बताये हुए मार्गदर्शन के आधार पर उस कठिनाई का निराकरण कर सुधार परिवर्तन करने में हो सकता है। इस प्रकार सांयकाल पठन-श्रवण नियमित बना लेने से शिक्षितों की तरह अशिक्षितों को भी प्राणवान सत्संग का लाभ मिलता रह सकता है।

कभी किसी सभा–सम्मेलन में किसी सामूहिक समस्या का समाधान बताना हो तो युगसाहित्य में से तद्‌विषयक परामर्श ढूंढ कर वक्ता की तरह लाउडस्पीकर पर सुनाया जा सकता है। यह ऐसी अच्छी प्रक्रिया है जिसके आधार पर समय-समय पर आवश्यक विषय पर विद्वान वक्ता का परामर्श सुनने का उपस्थित जनता को सहज सुयोग मिल सकता है। प्रस्तावित प्रज्ञा पुस्तकालय इतने प्राणवान और उपयोगी होंगे कि उसे देखते हुये स्थापना के लिए किया गया श्रम और खर्च हुए धन का एक-एक कण सार्थक हुआ अनुभव होगा। हर व्यक्ति को एक-एक करके किसी प्रसंग पर उसकी विकृतियों का सुधार तथा जो नये सिरे से करना है, उसका स्वरूप समझना कठिन है किन्तु पुस्तकालय की स्थापना—उसमें मात्र आदर्शवादी साहित्य रखना—साहित्य को स्थानीय शिक्षितों तक पहुँचाना वापिस लाना ऐसा उपक्रम है जिससे नैतिक, बौद्धिक सामाजिक क्रान्ति के तीनों हा उद्देश्य पूरे हो सकते हैं। संव्याप्त कूड़े-करकट को—धुंध और बंधड़ को—निरस्त करने के लिए प्रज्ञा पुस्तकालयों की योजना अद्वितीय है। इसे अपनाने और कर गुजरने का साहस प्रत्येक विचारशील को जुटाना चाहिए।

क्रमांक–२३१ । युगान्तर चेतना प्रेस शांतिकुञ्ज, हरिद्वार । मूल्य–४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org